पौलुस के धर्मविज्ञान का केन्द्र

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय चार

पौलुस और कुरिन्थियों

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 3

तैयारी 4

नोट्स 5

I. परिचय (0:26) 5

II. पृष्ठभूमि (2:40) 5

A. तीसरी मिशनरी यात्रा (3:17) 5

B. कुरिन्थ में समस्याएँ (7:29) 7

1. टूटे हुए संबंध *(8:58)* *7*

2. लैंगिक दुराचरण *(13:25)* *8*

3. आराधना में दुर्व्यवहार *(16:04)* *9*

4. पौलुस के प्रेरित होने के अधिकार की अस्वीकृति *(21:29)* *10*

III. संरचना और विषय सूची (24:27) 10

A. 1 कुरिन्थियों (24:47) 10

1. अभिवादन *(25:53)* *10*

2. आभार-प्रदर्शन *(26:09)* *11*

3. समाप्ति *(26:19)* *11*

4. मुख्य भाग *(26:36)* *11*

B. 2 कुरिन्थियों (38:13) 14

1. अभिवादन *(38:53)* *14*

2. परिचय *(39:09)* *14*

3. समाप्ति *(39:52)* *15*

4. मुख्य भाग *(40:01)* *15*

IV. धर्मविज्ञानी दृष्टिकोण (48:12) 17

A. विश्वास (52:35) 18

1. मसीह, प्रभु के रूप में *(53:03)* *18*

2. मसीह, उद्धारकर्ता के रूप में *(56:16)* *18*

B. आशा (1:00:58) 19

C. प्रेम (1:04:24) 20

V. उपसंहार (1:09:30) 21

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 22

उपयोग के प्रश्न 27

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

तैयारी

- पढ़ें प्रेरितों के काम 18:23–21:17
- पढ़ें 1 कुरिन्थियों
- पढ़ें 2 कुरिन्थियों

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:26)

II. पृष्ठभूमि (2:40)

A. तीसरी मिशनरी यात्रा (3:17)

पौलुस ने मुख्यत: उसी मार्ग को दोहराया जिससे उसने अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा में यात्रा की थी, उसने 52 या 53 ईस्वी के लगभग ने इसे आरम्भ किया।

- सीरिया के अन्ताकिया
- गलातिया
- फ्रूगिया
- दिरबे
- लुस्त्रा
- इकुनियुम
- पिसिदिया के अन्ताकिया

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- इफिसुस
- मकिदुनिया
- अखया
- फिलिप्पी
- त्रोआस
- अस्सुस
- मितुलेने
- खियुस
- सामोस
- मिलेतुस
- कोस
- रूदुस
- पतरा
- साइप्रस

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- सूर
- पतुलिमयिस
- कैसरिया

पौलुस ने इस तीसरी मिशनरी यात्रा के दौरान कैनन में शामिल इन दो पत्रियों के साथ-साथ दो अतिरिक्त पत्रियों को भी लिखा था जो अब अस्तित्व में नहीं हैं।

B. कुरिन्थ में समस्याएँ (7:29)

कुरिन्थ की कलीसिया में उत्पन्न हुई बहुत सी समस्याएँ युगान्तविद्या की गलत समझ के कारण उत्पन्न हुई थीं, अर्थात् मसीह आने वाले युग को, उद्धार और जीवन के युग को किस प्रकार लेकर आया था। बहुत से कुरिन्थी यह मानने लगे थे कि उन्होंने वास्तव में किसी भी दूसरे व्यक्ति से अधिक भविष्य की आशीषों को पा लिया था।

1. टूटे हुए संबंध (8:58)

a. गुटबाजी

पौलुस को सूचना मिली थी कि कुरिन्थ के विश्वासी जिस शिक्षक को सबसे अधिक सम्मान देते थे उस से अपने आप को जोड़ने के द्वारा एक-दूसरे के विरोधी बन गए थे।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

b. मुकदमे

c. कुरिन्थ में निर्धनता

एक-दूसरे की परवाह का अभाव प्रभु भोज में निर्धनों के साथ होने वाले दुर्व्यवहार में भी प्रकट था।

d. यरूशलेम में निर्धनता

कुरिन्थ के लोग सहायतारूपी धन को एकत्रित करने में उनकी असफलता जिसकी उन्होंने यरूशलेम के निर्धन मसीहियों के लिए प्रतिज्ञा की थी।

2. लैंगिक दुराचरण (13:25)

बहुत से कुरिन्थियों का विश्वास था कि यीशु आ चुका था इसलिए लैंगिक मामले अब महत्वपूर्ण नहीं रहे थे।

कलीसिया में कुछ लोगों ने लैंगिक लाइसेन्स का दृष्टिकोण अपना लिया था।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

कुछ विश्वासी दूसरे छोर पर चले गए थे, वे विवाह में भी तप और लैंगिक परहेज को प्राथमिकता देने लगे थे।

3. आराधना में दुर्व्यवहार (16:04)

a. पुरूष और स्त्री की भूमिकाएँ, 11:2-16

एक सलाह जो उसने दी वह प्रार्थनाओं के दौरान सिर को ढ़कने से संबंधित थी।

b. आत्मिक वरदान, 12–14

पौलुस ने बल दिया कि जब तक विश्वासी एक-दूसरे की सुनेंगे नहीं और एक-दूसरे को स्वीकार नहीं करेंगे, तब तक उन्हें उन शब्दों से कोई लाभ नहीं होगा जो पवित्र आत्मा ने दिए हैं।

c. मूरतों को अर्पित किया गया माँस, 8–10

पौलुस ने बल दिया कि अन्यजातियों की पूजा की रीतियाँ माँस को दूषित नहीं करती, और मसीही इस भोजन को तब तक खा सकते थे जब तक कि वे अन्यजाति पूजा की क्रिया के रूप में ऐसा न करें। परन्तु उसने यह चेतावनी भी दी कि गलत विवेक के साथ खाने वाले विश्वासी मूर्तिपूजा कर बैठते थे।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

4. पौलुस के प्रेरित होने के अधिकार की अस्वीकृति (21:29)

एक प्रेरित के रूप में पौलुस के अधिकार की अस्वीकृति उनकी सबसे बड़ी समस्या थी। पहली और दूसरी दोनों पत्रियों में यह विषय प्रकट होता है।

झूठे प्रेरित पौलुस और अन्य वैध प्रेरितों के समान ही अधिकार रखने का दावा करते थे। उन्होंने झूठा सुसमाचार भी सिखाया था जो बहुत से कुरिन्थी मसीहियों को पापपूर्ण विचार और जीवनशैली की ओर लुभा रहा था।

यदि कुरिन्थियों ने झूठे प्रेरितों को स्वीकार और पौलुस की शिक्षा को अस्वीकार कर दिया तो वे मसीह और सुसमाचार दोनों का इन्कार कर देंगे।

III. संरचना और विषय सूची (24:27)

A. 1 कुरिन्थियों (24:47)

कुरिन्थियों की पहली पत्री वास्तव में दूसरी पत्री है जो हम जानते हैं कि पौलुस ने कुरिन्थ की कलीसिया को लिखी थी।

1. अभिवादन (25:53)

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. आभार-प्रदर्शन (26:09)

3. समाप्ति (26:19)

4. मुख्य भाग (26:36)

मुख्य भाग दो हिस्सों से निर्मित है : खलोए के घराने से प्राप्त सूचनाओं के बारे में पौलुस का प्रत्युत्तर। और, कुरिन्थ की कलीसिया से प्राप्त पत्र का उसका प्रत्युत्तर।

a. सूचनाओं के बारे में पौलुस का प्रत्युत्तर

- **कलीसिया में गुटबाजी**

  यदि उन्होंने अपने प्राथमिक अगुवे के रूप में केवल यीशु की ही ओर देखा होता, और प्रेरितों और शिक्षकों को मसीह के सेवकों के रूप में माना होता तो कुरिन्थियों में कुछ विशेष प्रेरितों और शिक्षकों को दी जाने वाली प्राथमिकता के कारण टकराव नहीं होता।

  पौलुस ने आत्मिक मामलों से निपटने के लिए सांसारिक बुद्धि की पूर्ण अयोग्यता के बारे में भी विस्तार से लिखा।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उनके सांसारिक मूल्यों ने उन्हें आत्मिक सत्य के प्रति अन्धा कर दिया था।

- **अनैतिकता**

कुरिन्थियों ने प्रत्यक्षत: इस कथन का दुरूपयोग किया था : "मेरे लिए सब कुछ उचित है।"

पौलुस ने 1कुरिन्थियों 6:12-13 में इस कथन के बारे में लिखकर इस गलती का जवाब दिया : "सब वस्तुएँ मेरे लिए उचित तो हैं, परन्तु सब वस्तुएँ लाभ की नहीं; सब वस्तुएँ मेरे लिए उचित हैं, परन्तु मैं किसी बात के अधीन न हूँगा... देह व्यभिचार के लिए नहीं, वरन् प्रभु के लिए है, और प्रभु देह के लिए है।"

- **संबंध**

पौलुस चाहता था कि वे संसार में अविश्वासियों से अपने संबंध बनाए रखें, परन्तु उन घोर पापियों से दूर रहें जो विश्वासी होने का दावा करते थे।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

b. **पत्रों का प्रत्युत्तर** (7:1–16:12)

- **विवाह, 7:1-40**

  पौलुस ने जिन प्रश्नों के जवाब दिए वे विवाह, पुनर्विवाह, और अविवाहित रहने से संबंधित थे।

- **मूरतों को बलि किया गया माँस, 8–10**

  पौलुस मूरतों को चढ़ाए गए माँस के विषय पर बात करता है।

  अध्याय 9 में उसने मसीही स्वतंत्रता को सीमित करने की अपनी स्वयं की इच्छा का वर्णन किया, अप्रत्यक्ष रूप से दूसरों से भी ऐसा ही करने के लिए कहा।

- **आराधना, 11:2-34**

- **आत्मिक वरदान, 12–14**

  पौलुस ने बताया कि सारे आत्मिक वरदान प्रेम में प्रयोग करने के लिए थे, और यदि उनका प्रयोग इस प्रकार नहीं किया जाता तो वे व्यर्थ हैं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- **पुनरूत्थान, 15**

  पौलुस ने बताया कि मसीह का पुनरूत्थान सुसमाचार की कुंजी है और विश्वासियों को अन्तिम उद्धार प्राप्त करने के लिए यीशु के समान ही जी उठना होगा।

- **कलीसिया के लिए धन और अपुल्लोस, 16:1-12**

B. 2 कुरिन्थियों (38:13)

1. अभिवादन (38:53)

अभिवादन बताता है कि पत्री पौलुस और तीमुथियुस की ओर से है और कुरिन्थ की कलीसिया और अखया के क्षेत्र के पवित्र लोगों के लिए लिखी गई है।

2. परिचय (39:09)

यह परिचय उस घोर कष्ट का वर्णन करता है जिसे पौलुस ने सेवकाई की खातिर सहा और साथ ही उस सांत्वना का भी जो उसे परमेश्वर से प्राप्त हुई।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. समाप्ति (39:52)

4. मुख्य भाग (40:01)

a. पौलुस का आचरण, 1:12–2:11

पौलुस ने दो मामलों में अपने आचरण का बचाव किया। पहला, उसने बताया कि क्यों वह कुरिन्थ में नहीं आया था जैसी उसने पहले योजना बनाई थी।

दूसरा, उसने एक गलत व्यवहार के बारे में बताया जो कुरिन्थियों में से एक व्यक्ति ने उसके साथ किया था।

b. पौलुस की सेवकाई, 2:12–7:1

पौलुस कहीं अधिक गम्भीर विषय के बारे में बात करता है : कुरिन्थियों की कलीसिया में कुछ लोग अब भी पौलुस की प्रेरिताई पर सन्देह करते थे।.

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पौलुस यह घोषणा करते हुए अपनी सेवकाई की प्रकृति का विस्तार से बचाव करता है कि उसकी बुलाहट और उसकी सामर्थ दोनों परमेश्वर की ओर से थी और स्पष्ट करता है कि उसकी प्रेरिताई को अस्वीकार करने के परिणाम गम्भीर हो सकते थे।

c. दान एकत्रित करना, 7:2–9:15

यहूदिया में अकाल के कारण यरूशलेम के मसीही अत्यधिक आवश्यकता में थे। कुरिन्थी अपने योगदान को एकत्रित करने के कार्य को पूरा करने में असफल हो गए थे।

d. पौलुस की सेवकाई, 10:1–12:13

कुरिन्थी प्रशिक्षित वक्ताओं को महत्व देते थे, और अपेक्षा रखते थे कि उनके अगुवे तनख्वाह लेने वाले हों। पौलुस पेशेवर भाषण कला का अभ्यास नहीं करता था, और कुरिन्थ में रहते समय कलीसिया पर बोझ न डालने के लिए उसने अपनी आर्थिक सहायता का प्रबन्ध स्वयं किया था, इसलिए उसे हीन माना गया।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

e. आगामी यात्रा, 12:14–13:10

पौलुस कुरिन्थ में आने की योजना बना रहा था चाहे इसका मतलब कलीसिया पर दण्ड हो या नहीं।

पौलुस ने गम्भीरता से इस आशा के साथ कुरिन्थियों को मन फिराव, विश्वास और उद्धार के सुसमाचार का प्रचार किया कि उसके विरोधी यीशु मसीह के सच्चे अनुयायी बन जाएँ।

IV. धर्मविज्ञानी दृष्टिकोण (48:12)

पौलुस ने अपने पाठकों को सुधारने के लिए अन्त के दिनों के अपने सिद्धान्त या "युगान्तविद्या" का प्रयोग किया।

कुरिन्थियों ने भी युगों की योजना का बहुत गलत मूल्यांकन किया था। उनके मनों में पाप और मृत्यु का वर्तमान युग लगभग समाप्त हो चुका था, और वे आने वाले युग की सारी खूबियों का आनन्द लेने के लिए स्वतंत्र थे। उनकी भ्रांति "अतिवादी युगान्तविद्या" की थी।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

A. विश्वास (52:35)

1. मसीह, प्रभु के रूप में (53:03)

कुरिन्थियों की नजर सबके ऊपर प्रभु और सबके उद्धारकर्ता के रूप में मसीह की महिमा से हट गई थी।

पौलुस ने इस तथ्य पर बल दिया कि आने वाला युग अभी अपनी पूर्णता में नहीं आया था। किसी ने भी "राज्य आरम्भ नहीं किया था।" हर कोई अब भी मसीह के लौटने की प्रतीक्षा में था।

2. मसीह, उद्धारकर्ता के रूप में (56:16)

कुरिन्थी उद्धारकर्ता के रूप में मसीह की भूमिका को कम करके आँकने के द्वारा भी उसकी प्रशंसा करने में असफल हो गए थे।

परन्तु बहुत से कुरिन्थियों के मन में यह था कि वरदान और आदर विश्वासियों द्वारा व्यक्तिगत रूप में अर्जित किए जाते थे।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पौलुस ने मसीह और विश्वासियों के बीच एकता के सिद्धान्त पर बल देने के द्वारा जवाब दिया।

पौलुस ने बल दिया कि विश्वासी अपना या दूसरों का शारीरिक या सांसारिक प्रमापों के अनुसार मूल्यांकन न करें। बल्कि, वह चाहता था कि वे सारे विश्वासियों को ऐसे लोगों के रूप में देखें जो मसीह में एक हैं, और वे एक-दूसरे के प्रति सम्मान और प्रेम दिखाएँ जैसा वे स्वयं प्रभु के लिए करते थे।

कुरिन्थियों को लिखी अपनी पत्रियों में, पौलुस ने निरन्तर संकेत दिया कि मसीह के साथ एकता दूसरे विश्वासियों का सम्मान करने, उन्हें महत्व देने और उनकी सेवा करने का आधार है।

B. आशा (1:00:58)

पौलुस ने कुरिन्थियों को उनकी आशीषों की अस्थाई प्रकृति के बारे में याद दिलाई।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

आशा के सिद्धान्त पर प्रत्यक्ष रूप से लागू होने वाला पौलुस द्वारा दिया गया सबसे लम्बा तर्क 1कुरिन्थियों अध्याय 15 में पाया जा सकता है।

पौलुस ने स्पष्ट किया कि आने वाले युग के अपनी पूर्णता तक पहुँचने से पहले किसी बड़ी घटना का होना और कुछ अतुल्य महत्वपूर्ण बदलावों का होना आवश्यक है।

C. प्रेम (1:04:24)

यह सत्य है कि पौलुस के लिए प्रेम का अर्थ वह है जिसे हम युगान्तीय गुण कह सकते हैं। प्रेम के स्थिर मूल्य के बारे में पौलुस का तर्क उसके प्रसिद्ध "प्रेम अध्याय," 1 कुरिन्थियों 13:8-10 में पाया जाता है।

पौलुस जितने आत्मिक वरदानों और मसीही गुणों का वर्णन करता है उन में से केवल प्रेम ही आने वाले युग में प्रकट होगा और चाहा जाएगा।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पौलुस ने संकेत दिया कि सारे वरदान, चाहे विशिष्ट हों या नहीं, ये सब व्यर्थ और निष्फल हैं यदि इनका प्रयोग प्रेम में न किया जाए।.

V. उपसंहार (1:09:30)

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. पौलुस ने कहाँ-कहाँ यात्रा की और उसकी तीसरी मिशनरी यात्रा का उद्देश्य क्या था?

2. कुरिन्थियों में पाई जाने वाली चार मुख्य समस्याओं और उनके फलस्वरूप निकली बातों को स्पष्ट कीजिए।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. स्पष्ट कीजिए कि पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा और कुरिन्थ की समस्याएँ किस प्रकार पौलुस द्वारा कुरिन्थियों को पत्री लिखने के कारण पर प्रकाश डालती हैं।

4. कुरिन्थियों को लिखी अपनी पहली पत्री के लिखने और उन्हें बताए गए मुख्य बिन्दुओं में पौलुस के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. कुरिन्थियों को लिखी अपनी दूसरी पत्री के लिखने और उन्हें बताए गए मुख्य बिन्दुओं में पौलुस के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

6. पौलुस की पहली और दूसरी पत्री के उद्देश्यों की तुलना कीजिए। वे कैसे एकसमान हैं और कैसे भिन्न हैं?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. अपने विश्वास और मसीह की सर्वोच्चता के विषय में कुरिन्थियों में कौनसी भ्रांतियां उत्पन्न हो गईं थीं?

8. आशा के विषय में पौलुस ने कुरिन्थियों को किस प्रकार निर्देश दिए?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

9. स्पष्ट कीजिए कि किस प्रकार पौलुस ने प्रेम को युगान्तीय सद्गुण कहा, और किस प्रकार जीवन में संबंधों पर इसका प्रभाव पड़ना चाहिए।

10. उन मुख्य बातों को सारगर्भित कीजिए जिसमें पौलुस ने कुरिन्थियों को अपनी अतिवादी युगांतविद्या को पुनः जांचने के लिए कहा।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. आपके विचार में लोग क्यों कुछ अगुवों को दूसरों से अधिक बड़ा मानने लगते हैं? इस बात से क्या खतरा उत्पन्न हो सकता है? किस प्रकार मसीह के प्रति समर्पण और उसके साथ पहचान से इस खतरे को दूर किया जा सकता है?

2. आराधना में हमारे आचरण की पौलुस की शिक्षा की तुलना लैव्यवस्था 10:1-3 से करें। किस प्रकार परमेश्वर का एक सही भय उस रीति को प्रभावित कर सकता है जिसमें हम एक दूसरे के साथ आराधना में आचरण करते हैं?

3. 1 कुरिन्थियों 6:12-13 में लैंगिक आचरण पर पौलुस की शिक्षा को स्पष्ट कीजिए। किस प्रकार लाभ और अधिकार की पौलुस की योग्यताएं हमारी उचित लैंगिक आचरण की ओर अगुवाई कर सकती हैं?

4. पौलुस के कष्टों को समझना, जैसा कि उसने 2 कुरिन्थियों 1 व्यक्त किया, किस प्रकार आपको अपने जीवन में क्लेशों और कष्टों को सहने में सहायता कर सकता है?

5. विश्वासी होने के रूप में हमारे भौतिक शरीरों का भविष्य का पुनरुत्थान किस प्रकार आपको आशा प्रदान कर सकता है? आज के आपके जीवन में यह आशा किस प्रकार आपको प्रभावित करनी चाहिए?

6. किस प्रकार प्रेम की एक सही समझ कलीसिया के भीतर और बाहर के लोगों के साथ आपके संबंधों को प्रभावित करनी चाहिए? आपके विचार में प्रेम क्यों एक स्थाई युगान्तीय सद्गुण है?

7. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है? क्यों?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org